क्रोध पर नियन्त्रण
शशिकांत निशांत शर्मा

एक बार एक राजा घने जंगल में भटक रहा था। राजा को बहुत जोर से प्यास लगी थी। इधर-उधर हर जंगल तलाश करने पर भी उसे कहीं पानी दिखाई नहीं दे पा रहा था। प्यास से उसका गला सुखा जा रहा था। तभी उसकी नजर एक वृक्ष पर पड़ी, जहाँ एक डाल से टप-टप करती थोड़ी-थोड़ी पानी की बूंदें गिर रही थीं।

राजा ने उस वृक्ष के पास जा�र नीचे पड़े पत्तों का दोनों बनाया और उन बूंदों से दोनों को भरने लगा। काफी समय लगने पर वह दोनों भर गया। राजा ने प्रसन्न होते हुए जैसे ही उस पानी को पीने के लिए दोनों को मुँह के पास ऊँचा किया, तभी वहाँ सामने बैठा हुआ एक तोता टूटे की आवाज करता हुआ आया और उस दोनों को झपट्टा मारकर वापस सामने की ओर बैठ गया। उस दोनों का पूरा पानी नीचे गिर गया।

राजा निराश हुआ कि बड़ी मुश्किल से पानी नसीब हुआ था और वो भी इस पक्षी ने गिरा दिया। लेकिन अब क्या हो सकता है? ऐसा सोचकर वह फिर से उस खानी दोनों को भरने लगा। काफी मशक्कत के बाद वह दोनों फिर भर गया। राजा ने पुनः हर्षित होकर जैसे ही उस पानी को पीने के लिए दोनों को उठाया तो वही सामने बैठा तोता टूटे करता हुआ आया और दोनों को झपट्टा मारकर नीचे गिरा के वापस सामने बैठ गया।

अब राजा हंसाशा के वशीभूत हो क्रृपित हो उठा - "मुझे जोर से प्यास लगी है। मैं इतनी मेहनत से पानी इकट्ठा कर रहा हूँ और यह दुष्क पक्षी मेरी सारी मेहनत को आकर गिरा देता है। मैं इसे नहीं छोड़ूँगा। अब की बार जब यह वापस आएगा तो इसे खत्म कर दूँगा।"

इस प्रकार वह राजा अपने हाथ में चाबूक लेकर वापस उस दोनों को भरने लगा। काफी समय बाद उस दोनों में पानी भर गया। राजा ने पीने के लिए जैसे ही उस दोनों को ऊँचा किया तो वह तोता पुनः टूटे करता हुआ उस दोनों को झपट्टा मारकर पास आया, वैसे ही राजा ने अपने चाबूक को तोते के ऊपर दे मारा और उस तोते के वही प्राण पखरु उड़ गए।
राजा ने सोचा - “इस तौरे से तो पीछा छूट गया। लेकिन ऐसे बूढ़े-बूढ़े से कब तक दोनों भरहुँगा और कब अपनी प्यास बुझा पाऊँगा, इसलिए जहाँ से यह पानी टपक रहा है, क्यों ना वहीं जाकर झट से पानी भर लूँ।” ऐसा सोचकर वह राजा उस डाली के पास पहुँच गया, जहाँ से पानी टपक रहा था। वहाँ जाकर जब राजा ने देखा तो उसके पाँवों के नीचे की जमीन खिसक गयी।

क्योंकि उस डाली पर एक भयंकर अजगर सोया हुआ था और उस अजगर के मूँह से लार टपक रही थी। राजा जिसको पानी समझ रहा था, वह अजगर की ज़हरीली लार थी। राजा के मन में पश्चाताप का समन्द्र उठने लगा।

“हे प्रभु! मैंने यह क्या कर दिया? जो पक्षी बार-बार मुझे ज़हर पीने से बचा रहा था, क्रोध के वशीभूत होकर मैंने उसे ही मार दिया। काश! मैंने सन्तों के बताये उत्तम ‘क्षमा मार्ग’ को धारण किया होता। अपने क्रोध पर नियंत्रण किया होता तो यह मेरा हितदीन निर्दोष पक्षी इसकी जान नहीं जाती। हे भगवान! मैंने अज्ञाता में कितना बड़ा पाप कर दिया? हाय! यह मेरे द्वारा क्या हो गया?” ऐसे घोर पश्चाताप से प्रेरित हो वह राजा दुःखी हो उठा।

क्षमा और दया धारण करने वाला सच्चा वीर होता है। क्रोध में व्यक्ति दुसरों के साथ-साथ अपना खुद का भी बहुत नुकसान कर लेता है। क्रोध वह ज़हर है, जिसकी उत्पत्ति अज्ञाता से होती है और अन्त पश्चाताप से होता है। इसलिए जितना भी हो सके हमेशा क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिये और क्रोध में आकर कभी कोई फैसला नहीं लेना चाहिये।